रिसाला नं.116

Nek Banne Ka Nuskha (Hindi)

नेक बनने का नुस्ख़ा

- क़दआवर सांप 2
- कौन सा अ़मल ज़ियादा अफ़ज़ल ? 13
- बेटे की मौत पर मुस्कुराहट 7
- ता ज़ियत के 16 म-दनी फूल 17

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नेक बनने का नुस्ख़ा

येह रिसाला **(नेक बनने का नुस्ख़ा)**

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता़ : **मजलिसे तराजिम** (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

नेक बनने का नुस्ख़ा[1]

ग़ालिबन शैत़ान बयान का येह रिसाला (23 सफ़ह़ात) नहीं पढ़ने देगा मगर आप पूरा पढ़ कर शैत़ान के वार को नाकाम बना दीजिये ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक शख़्स ने ख़्वाब में "ख़ौफ़नाक बला" देखी, घबरा कर पूछा : तू कौन है ? **बला** ने जवाब दिया : "मैं तेरे बुरे आ'माल हूं ।" पूछा : तुझ से नजात की क्या सूरत है ? जवाब मिला : **दुरूद शरीफ़ की कसरत ।** (اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص۲۰۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत से मा'लूम हुवा कि दुरूद शरीफ़ की कसरत भी **नेक बनने का नुस्ख़ा** है । ऐ काश ! हम उठते बैठते चलते फिरते हर वक़्त दुरूदो सलाम पढ़ते रहें ।

तुरबत में होगी दीद रसूले अनाम की
आदत बना रहा हूं दुरूदो सलाम की

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1 : येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा इज्तिमाअ़ (2,3,4 र-जबुल मुरज्जब 1419 सि.हि. मदीनतुल औलिया मुलतान) में फ़रमाया । ज़रूरी तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है । **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

क़दआवर सांप

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से किसी ने उन की तौबा का सबब पूछा तो फ़रमाया : मैं मह़कमए पोलीस में सिपाही था, गुनाहों का आ़दी और पक्का शराबी था । मेरी एक ही बच्ची थी उस से मुझे बेह़द प्यार था । वोह दो[2] साल की उ़म्र में फ़ौत हो गई, मैं ग़म से निढाल हो गया । इसी साल जब शबे बराअत आई मैं ने नमाज़े इ़शा तक न पढ़ी, ख़ूब शराब पी और नशे ही में मुझे नींद ने घेर लिया । मैं ख़्वाब की दुन्या में पहुंच गया, क्या देखता हूं कि मह़शर बरपा है, मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों से उठ कर जम्अ़ हो रहे हैं, इतने में मुझे अपने पीछे सर-सराहट मह़सूस हुई, मुड़ कर जो देखा तो एक **क़दआवर सांप** मुंह खोले मुझ पर ह़म्ला आवर होने वाला था ! मैं घबरा कर भाग खड़ा हुवा, सांप भी मेरे पीछे पीछे दौड़ने लगा, इतने में एक नूरानी चेहरे वाले **कमज़ोर बुज़ुर्ग** पर मेरी नज़र पड़ी, मैं ने उन से फ़रियाद की, उन्हों ने फ़रमाया : "मैं बेह़द कमज़ोर हूं आप की मदद नहीं कर सकता ।" मैं फिर तेज़ी के साथ भागने लगा, सांप भी बराबर तआ़क़ुब में था, दौड़ते दौड़ते मैं एक टीले पर चढ़ गया, टीले के उस त़रफ़ **ख़ौफ़नाक आग** शो'लाज़न थी और काफ़ी लोग उस में जल रहे थे, मैं उस में गिरने ही वाला था कि आवाज़ आई : "पीछे हट जा तू इस आग के लिये नहीं है ।" मैं ने अपने आप को संभाला दिया और पलट कर दौड़ने लगा और **सांप** भी पीछे पीछे था, वोही **कमज़ोर बुज़ुर्ग** मुझे फिर मिल गए और रो कर फ़रमाने लगे : "अफ़्सोस ! मैं बहुत ही कमज़ोर हूं आप की मदद नहीं कर सकता, वोह देखिये सामने जो **गोल पहाड़** है वहां मुसल्मानों की "अमानतें" हैं, वहां तशरीफ़ ले

जाइये, अगर आप की भी वहां कोई अमानत हुई तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ रिहाई की कोई सूरत निकल आएगी।" मैं गोल पहाड़ पर पहुंचा, वहां दरीचे बने हुए थे, उन दरीचों पर रेशमी पर्दे लटक रहे थे, दरवाज़े **सोने** के थे और उन में **मोती** जड़े हुए थे। फ़िरिश्ते ए'लान फ़रमाने लगे : "पर्दे हटा दो, दरवाज़े खोल दो, शायद इस परेशान ह़ाल की कोई "अमानत" यहां मौजूद हो, जो इसे सांप से बचा ले।" दरीचे खुल गए और बहुत सारे बच्चे चांद से चेहरे चमकाते झांकने लगे, इन ही में मेरी फ़ौत शुदा दो सालह **बच्ची** भी थी, मुझे देख कर वोह रो रो कर चिल्लाने लगी : "ख़ुदा की क़सम ! येह तो मेरे अब्बूजान हैं," फिर ज़ोरदार छलांग लगा कर वोह मेरे पास आ पहुंची और अपने बाएं हाथ से मेरा दायां हाथ थाम लिया। येह देख कर वोह **क़दआवर सांप** पलट कर भाग खड़ा हुवा, अब मेरी जान में जान आई, बच्ची मेरी गोद में बैठ गई और सीधे हाथ से मेरी दाढ़ी सहलाते हुए उस ने पारह 27 **सू-रतुल ह़दीद** की 16वीं आयत का येह जुज़ तिलावत किया :

اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की याद और उस ह़क़ (या'नी क़ुरआने पाक) के लिये जो उतरा।

अपनी बच्ची से येह आयते करीमा सुन कर मैं रो पड़ा। मैं ने पूछा : बेटी वोह **क़दआवर सांप** क्या बला थी ? कहा : वोह आप के बुरे आ'माल थे जिन को आप बढ़ाते ही चले जा रहे हैं। **क़दआवर सांप** नुमा बद आ'मालियां आप को जहन्नम में पहुंचाने के दरपै हैं। पूछा : वोह **कमज़ोर बुज़ुर्ग** कौन थे ? कहा : वोह आप की नेकियां थीं चूंकि आप

नेक अ़मल बहुत कम करते हैं लिहाज़ा वोह बेह़द कमज़ोर हैं और आप की बुराइयों का मुक़ाबला करने से क़ासिर । मैं ने पूछा : तुम यहां पहाड़ पर क्या करती हो ? कहा : "मुसल्मानों के फ़ौत शुदा बच्चे यहीं मुक़ीम हो कर क़ियामत का इन्तिज़ार करते हैं, हमें अपने वालिदैन का इन्तिज़ार है कि वोह आएं तो हम उन की शफ़ाअ़त करें ।" फिर मेरी आंख खुल गई, मैं इस ख़्वाब से सहम गया था, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपने तमाम गुनाहों से रो रो कर तौबा की । **(روضُ الرّیاحین ص۱۷۳)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ौत शुदा बच्चा मां बाप को जन्नत में ले जाएगा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़िकायत में हमारे लिये इ़ब्रत के बे शुमार म-दनी फूल हैं, जिन में एक म-दनी फूल येह भी है कि जिस का ना बालिग़ बच्चा फ़ौत हो जाता है वोह नुक़्सान में नहीं बल्कि फ़ाएदे में रहता है, जैसा कि सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की फ़ौत शुदा म-दनी मुन्नी ख़्वाब में उन की हिदायत का बाइ़स बनी और शराब नोशी और गुनाहों की कसरत करने वाले को उठा कर आस्माने विलायत का दरख़्शन्दा सितारा बना दिया ! **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिन दो[2] मुसल्मान मियां बीवी के तीन[3] बच्चे फ़ौत हो जाएं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो रह़मत से उन दोनों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर सिर्फ़ दो[2] बच्चे फ़ौत हुए हों तो ? फ़रमाया : दो भी । फिर अ़र्ज़ की : अगर एक बच्चा फ़ौत हुवा हो तो ? फ़रमाया : हां एक भी, इस के बा'द फ़रमाया : उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है जिस औ़रत का कच्चा बच्चा (या'नी मां के पेट से ना मुकम्मल गिर जाने वाला) फ़ौत हो जाए और वोह इस पर **सब्र** करे तो वोह बच्चा अपनी मां को

अपनी नाल[1] के ज़रीए़ खींचता हुवा जन्नत में ले जाएगा।

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۸ ص ۲۵٤حدیث ۲۲۱۵۱)

आपस में हंसने पर आयत का नुज़ूल

बयान कर्दा ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار की ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत में दिल पर चोट लगाने वाली जिस आयते कुरआनी का तज़्किरा है **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में इस का शाने नुज़ूल येह है : उम्मुल मुअमिनीन आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दौलत सराए अक़्दस से बाहर तशरीफ़ लाए तो मुसल्मानों को देखा कि आपस में हंस रहे हैं। फ़रमाया : तुम **हंसते** हो ! अभी तक तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से अमान नहीं आई और तुम्हारे हंसने पर येह आयत नाज़िल हुई। उन्हों ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस **हंसी** का कफ़्फ़ारा क्या है ? फ़रमाया : उतना ही **रोना**। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 27, अल ह़दीद, ज़ेरे आयत : 16)

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता
हमें रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बांसरी से आयत की आवाज़ गूंज उठी !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई येह आयते करीमा नेक बनने का बेहतरीन म-दनी नुस्ख़ा है, इस ज़िम्न में एक और ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत समाअ़त फ़रमाइये, चुनान्चे इस आयते मुबा-रका को सुन कर न जाने कितनों की ज़िन्दगियों में म-दनी इन्क़िलाब आ गया। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं :

1 : या'नी वोह आंत जो रेह़मे मादर में बच्चे के पेट से जुड़ी होती है और जिसे पैदाइश पर काट कर जुदा कर देते हैं।

मेरा उन्फ़ुवाने शबाब था, अपने दोस्तों के हमराह सैरो तफ़रीह़ करते हुए एक बाग़ में पहुंचा, मुझे बांसरी बजाने का बहुत शौक़ था, रात जूं ही बांसरी बजाने के लिये उठाई, बांसरी में से येह आयते करीमा गूंज उठी :

اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ

(پ۲۷،الحدید:۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की याद (के लिये) ।

आयत सुन कर मेरा दिल चोट खा गया, मैं ने बांसरी तोड़ डाली और गुनाहों से सच्चे दिल से तौबा की और अ़ह्द किया कि कोई ऐसा काम हरगिज़ नहीं करूंगा जो मुझे अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से दूर कर दे । (شُعَبُ الْاِیمان ج۵ ص۴۶۸ حدیث ۷۳۱۷)

नाबीना को आंखें मिल गईं

देखा आप ने ! येह आयते करीमा ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की हिदायत का ज़रीआ़ बन गई और आप विलायत के बहुत बड़े मन्सब पर फ़ाइज़ हो गए। एक बार आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहीं तशरीफ़ लिये जा रहे थे कि एक नाबीना मिला, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : कहो क्या ह़ाजत है ? अ़र्ज़ की : आंखें दरकार हैं । आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उसी वक़्त दुआ़ के लिये हाथ उठा दिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने उस नाबीना की आंखें रोशन कर दीं ।** (تذکرۃ الاولیاء ج ۱ ص ۱۶۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

डाकू को हिदायत कैसे मिली ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **"सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के नेक बनने का सबब

भी येही आयत बनी ।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने दौर के मश्हूर डाकू थे । किसी औ़रत के इ़श्क़ में गिरिफ़्तार हो गए, वोह भी बदकारी के लिये आमादा हो गई, जब मुक़र्ररा वक़्त पर गए तो कहीं से इसी आयत اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ तर-ज-मए **कन्ज़ुल ईमान :** क्या ईमान वालों को अभी वोह वक़्त न आया कि उन के दिल झुक जाएं **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) की याद (के लिये) (پ۲۷،الحدید:۱۶) । की तिलावत की आवाज़ आ रही थी, दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई, रोते हुए पलटे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से गिड़गिड़ा कर अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगी, नेकियों में दिल लगाया, मक्कए मुकर्रमा में अ़र्सए दराज़ तक इ़बादत की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल औलिया में शामिल हुए ।

(روحُ البیان ج۹ ص ۳۶۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बेटे की मौत पर मुस्कुराहट

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मशाइख़ के अ़ज़ीम पेश्वा ह़ज़रते सय्यिदुना **फ़ुज़ैल बिन इ़याज़** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को किसी ने कभी मुस्कुराते हुए नहीं देखा । जिस दिन आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ली बिन फ़ुज़ैल** رَحِمَهُمَا اللهُ تَعَالٰى ने वफ़ात पाई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मुस्कुराने लगे ! लोगों ने अ़र्ज़ की : येह कौन सा ख़ुशी का मौक़अ़ है जो आप मुस्कुरा रहे हैं ! फ़रमाया : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी हो कर मुस्कुरा रहा हूं, क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ही के सबब मेरे बेटे को क़ज़ा आई है । रब عَزَّوَجَلَّ की पसन्द अपनी पसन्द । **(تذکرۃ الاولیاء ج۱ ص ۸۶ مُلَخَّصاً)**

जे सोहना मेरे दुख विच राज़ी मैं सुख नूं चुल्लहे पावां

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या आप नेक बनना चाहते हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या आप वाक़ेई नेक बनना चाहते हैं ? अगर हां तो फिर इस के लिये आप को थोड़ी बहुत कोशिश करनी पड़ेगी । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाइयों के लिये **72**, इस्लामी बहनों के लिये **63**, त़-ल-बए इल्मे दीन के लिये **92**, दीनी त़ालिबात के लिये **83**, म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों के लिये **40** जब कि ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये **27 म-दनी इन्आ़मात** हैं । बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़-लबा **म-दनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल **"फ़िक्रे मदीना करते हुए"** या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर **म-दनी इन्आ़मात** के जेबी साइज़ रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं। इन म-दनी इन्आ़मात को इख़्लास के साथ अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से अक्सर दूर हो जाती हैं और इस की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन भी बनता है । सभी को चाहिये कि बा किरदार मुसल्मान बनने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला ह़ासिल करें और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** (या'नी अपना मुह़ा-सबा) करते हुए इस में दिये गए ख़ाने पुर करें और हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ हर म-दनी या'नी क़-मरी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के **म-दनी इन्आ़मात** के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बनाएं ।

तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल म-दनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

यौमे कुफ़्ले मदीना

फ़ुज़ूल बात करने में गुनाह नहीं मगर फ़ुज़ूल बोलते बोलते गुनाहों भरी बातों में जा पड़ने का सख़्त अन्देशा रहता है इस लिये फ़ुज़ूल गोई से बचने की आ़दत बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल में हर महीने की पहली पीर शरीफ़ (या'नी इतवार मग़रिब ता पीर मग़रिब) ''यौमे कुफ़्ले मदीना'' मनाने की इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये तरग़ीब है, इस का लुत्फ़ तो वोह समझ सकता है जो येह दिन मनाता है । इस में **मक-त-बतुल मदीना** का रिसाला ''ख़ामोश शहज़ादा'' (48 सफ़ह़ात) एक बार पढ़ना या सुनना है, अकेले पढ़िये या आपस में थोड़ा थोड़ा पढ़ कर सुना दीजिये, इस त़रह़ ख़ामोशी का जज़्बा मिलेगा । **यौमे कुफ़्ले मदीना** में ह़त्तल इम्कान ज़रूरत की बात भी इशारे से या लिख कर कीजिये । हां जो इशारे वग़ैरा न समझता हो या जहां बोलना ज़रूरी हो वहां ज़बान से बोलिये म-सलन सलाम व जवाबे सलाम, छींक पर ह़म्द या ह़म्द करने वाले का जवाब, इसी त़रह़ नेकी की दा'वत देना वग़ैरा वग़ैरा । जो लोग इशारे नहीं समझते उन के साथ ज़रूरतन ज़बान से बातचीत कीजिये और येह म-दनी फूल तो उ़म्र भर के लिये क़बूल फ़रमा लीजिये कि जब भी काम की बात करनी हो कम से कम अल्फ़ाज़ में निमटा ली जाए, इतना ज़ियादा मत बोलिये कि मुख़ातब या'नी जिस से बात कर रहे हैं वोह बेज़ार हो जाए । बहर ह़ाल हर उस अन्दाज़ से बचिये जो तन्फ़ीरे अ़वाम (या'नी लोगों में नफ़रत फैलने) का बाइ़स हो । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ ऐसे भी हैं जो हर माह लगातार तीन[3] दिन ''यौमे कुफ़्ले मदीना'' मनाते हैं । काश ! हम ज़िन्दगी भर रोज़ाना ही ''यौमे कुफ़्ले मदीना'' मनाने वाले बन जाएं । काश ! दिल के म-दनी

गुलदस्ते में उ़म्र भर के लिये येह म-दनी फूल सज जाए : "फ़ुज़ूल गोई से बचो ताकि गुनाहों भरी बातों में पड़ कर जहन्नम में न जा पड़ो !"

आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा

म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस **म-दनी बहार** से लगाइये चुनान्चे ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़ल्फ़िय्या (या'नी क़समिया) बयान है कि माहे र-जबुल मुरज्जब 1426 हिजरी की एक शब मुझे ख़्वाब में **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, और मीठे बोल के अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से म-दनी इन्आ़मात से मु-तअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।**

"म-दनी इन्आ़मात" की भी मरह़बा क्या बात है
क़ुर्बे ह़क़ के त़ालिबों के वासित़े सौग़ात है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरा म-दनी इन्आ़म

72 म-दनी इन्आ़मात में इस्लामी भाइयों के लिये **दूसरा म-दनी इन्आ़म** येह है : "क्या आप रोज़ाना पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करते हैं ?" **मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** सिर्फ़ इस एक म-दनी इन्आ़म पर अगर कोई सह़ीह़ मा'नों में कारबन्द हो जाए तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का बेड़ा पार हो जाए। नमाज़ के फ़ज़ाइल से कौन वाक़िफ़ नहीं ?

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (ترغیب و ترہیب)

तमाम सग़ीरा गुनाह मुआ़फ़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के **मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े और उन में सह्व (या'नी ग़-लत़ी) न करे तो जो पेशतर इस के गुनाह हुए हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ फ़रमा देता है। (यहां गुनाहे सग़ीरा मुआ़फ़ होना मुराद हैं)

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۸ص۶۲ حدیث ۲۱۷۴۹)

जमाअ़त की फ़ज़ीलत

देखा आप ने ! दो रक्अ़त की जब येह फ़ज़ीलत है तो पांच फ़र्ज़ नमाज़ों की कैसी कैसी ब-र-कतें होंगी ! इस ''म-दनी इन्आ़म'' में नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करनी हैं, और जमाअ़त की फ़ज़ीलत के तो क्या कहने ! मुस्लिम शरीफ़ में सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है : ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''नमाज़े बा जमाअ़त तन्हा पढ़ने से 27 द-रजे बढ़ कर है।'' **(مسلم ص ۳۲۶ حدیث ۶۵۰)**

तक्बीरे ऊला की फ़ज़ीलत

मज़ीद इस ''म-दनी इन्आ़म'' में तक्बीरे ऊला का भी ज़िक्र है। इस की भी फ़ज़ीलत सुनिये और झूमिये **इब्ने माजह** की रिवायत में है : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो मस्जिद में बा जमाअ़त 40 रातें नमाज़े इ़शा इस त़रह़ पढ़े कि पहली रक्अ़त फ़ौत न हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख देता है।'' **(ابنِ ماجه ج۱ص ۴۳۷ حدیث ۷۹۸)** سُبْحٰنَ اللّٰه ! चालीस रातें जब इ़शा की चारों रक्अ़तें बा जमाअ़त अदा करने की येह फ़ज़ीलत है तो ज़िन्दा रह जाने की सूरत में बरस्हा बरस तक पांचों नमाज़ें

तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा करने का क्या मक़ाम होगा !

नमाज़ में ह़ज का सवाब

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "जो त़हारत कर के अपने घर से फ़र्ज़ नमाज़ के लिये निकला उस का सवाब ऐसा है जैसा **ह़ज** करने वाले मोह़रिम (एह़राम बांधने वाले) का ।" (ابوداؤد ج١ ص٢٣١ حديث ٥٥٨)

दिन में पांच मर्तबा ग़ुस्ल की मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : बताओ अगर किसी के दरवाज़े पर एक नहर हो जिस में वोह हर रोज़ पांच बार ग़ुस्ल करे तो क्या उस पर कुछ मैल रह जाएगा ? लोगों ने अ़र्ज़ की : उस के मैल में से कुछ बाक़ी न रहेगा । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पांचों नमाज़ों की ऐसी ही मिसाल है **अल्लाह तआला** इन के सबब ख़त़ाएं मिटा देता है । (مسلم ص٣٣٦ حديث٦٦٧)

जन्नती ज़ियाफ़त

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस "म-दनी इन्आ़म" की रू से नमाज़ें भी मस्जिद ही में अदा करनी हैं और मस्जिद को जाना سُبْحٰنَ الله ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो सुब्ह़ या शाम मस्जिद में आए, **अल्लाह तआला** उस के लिये जन्नत में एक ज़ियाफ़त तय्यार फ़रमाएगा ।" (ايضاً حديث٦٦٩)

पहली सफ़

पहली सफ़ का ज़िक्र भी इस ''म-दनी इन्आ़म'' में मौजूद है । सरकारे मक्कतुल मुकर्रमा, सरदारे मदीनतुल मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''लोग अगर जानते कि अज़ान और **पहली सफ़** में क्या है तो बिग़ैर क़ुरआ़ डाले न पाते लिहाज़ा इस के लिये क़ुरआ़ अन्दाज़ी करते ।'' (مسلم ص۲۳۱ حدیث ۴۳۷) एक और रिवायत में है : रह़मते आ़लम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते **पहली सफ़** पर दुरूद (या'नी रह़मत) भेजते हैं । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : और दूसरी सफ़ पर ? फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं **पहली सफ़** पर । सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने फिर अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! और दूसरी पर भी ? फ़रमाया : दूसरी पर भी । मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : सफ़ें बराबर करो और कन्धे को मुक़ाबिल (या'नी एक सीध में) करो, अपने भाइयों के हाथों में नर्म हो जाओ और कुशा-दगियों (या'नी सफ़ की ख़ाली जगहों) को बन्द करो कि शैत़ान भेड़ के बच्चे की त़रह़ तुम्हारे बीच में दाख़िल हो जाता है ।

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۸ ص۲۹۶ حدیث ۲۲۳۲۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कौन सा अ़मल ज़ियादा अफ़्ज़ल ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हो सकता है आप में से किसी को ''म-दनी इन्आ़मात'' मुश्किल मा'लूम हों मगर हिम्मत न हारें । मन्क़ूल है : اَفْضَلُ الْعِبَادَةِ اَحْمَزُهَا या'नी ''अफ़्ज़ल तरीन इ़बादत वोह है जिस में मशक़्क़त ज़ियादा हो ।'' (مقاصد حسنه ص۷۹) ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : ''दुन्या में जो अ़मल जितना

दुश्वार होगा बरोज़े क़ियामत मीज़ाने अ़मल में वोह उतना ही ज़ियादा वज़्न दार होगा ।'' **(تذکرۃ الاولیاء ج۱ص۹۵)** जब अ़मल शुरूअ़ कर देंगे तो वोह आप के लिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आसान हो जाएगा । ग़ालिबन आप को तजरिबा होगा कि सख़्त **सर्दी** के वक़्त वुज़ू के लिये बैठते हैं तो शुरूअ़ में सर्दी से दांत बजते हैं फिर हिम्मत कर के जब वुज़ू शुरूअ़ कर देते हैं तो अगर्चे **इब्तिदाअन** ठन्डक ज़ियादा महसूस होती है मगर फिर ब तदरीज कम हो जाती है । हर मुश्किल काम का येही उसूल है । म-सलन किसी को कोई **मोहलिक बीमारी** लग जाए तो वोह बेचैन हो जाता है फिर रफ़्ता रफ़्ता जब आ़दी हो जाता है तो क़ुव्वते बरदाश्त भी पैदा हो जाती है । एक इस्लामी भाई **इर्क़ुन्निसा** के मरज़ में मुब्तला हो गए येह मरज़ उ़मूमन पाउं के टख़्ने से ले कर रान के ऊपर के जोड़ तक होता है और महीनों और बा'ज़ों को बरसों तक नहीं जाता । वोह तश्वीश में पड़ गए थे । मैं ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर करेगा । घबराएं नहीं जब आप आ़दी हो जाएंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बरदाश्त करना आसान हो जाएगा । कुछ अ़र्से बा'द मिले तो मेरे इस्तिफ़्सार पर बताया कि दर्द तो वोही है मगर आप के कहने के मुताबिक़ मैं आ़दी हो चुका हूं इस लिये काम चल जाता है । **म-दनी इन्आ़मात** चूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार बनाने और दुन्या व आख़िरत की बेहतरियां दिलाने के लिये हैं । लिहाज़ा शैत़ान इस में काफ़ी रुकावटें खड़ी करेगा मगर आप हिम्मत मत हारिये, बस येह ज़ेह्न बना लीजिये कि मुझे इन ''म-दनी इन्आ़मात'' पर अ़मल करना ही चाहिये ।

सरवरे दीं ! लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा कब तक दबाते जाएंगे

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

म-दनी काम बढ़ाने का नुस्ख़ा

अगर दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदारान ख़ुसूसी तवज्जोह फ़रमा कर इस म-दनी काम का बीड़ा उठा लें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर त़रफ़ सुन्नतों की **बहार** आ जाए । अगर आप सब ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर **ब समीमे** क़ल्ब **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल शुरूअ़ कर दिया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जीते जी और वोह भी जल्द ही इस की ब-र-कतें देख लेंगे, आप को اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुकूने क़ल्ब नसीब होगा, बातिन की सफ़ाई होगी, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सौते (या'नी चश्मे) आप के दिल से फूटेंगे, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के अ़लाक़े में **दा'वते इस्लामी** का म-दनी काम ह़ैरत अंगेज़ ह़द तक बढ़ जाएगा । चूंकि "म-दनी इन्आ़मात" पर अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के ह़ुसूल का ज़रीआ़ है, लिहाज़ा शैत़ान आप को बहुत सुस्ती दिलाएगा, त़रह़ त़रह़ के ह़ीले बहाने सुझाएगा, आप का दिल नहीं लग पाएगा, मगर आप हिम्मत मत हारिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दिल भी लग ही जाएगा ।

ऐ रज़ा हर काम का इक वक़्त है
दिल को भी आराम हो ही जाएगा

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़)

अ़मल करने वालों की तीन अक़्साम

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान मग़रिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي से उन के एक मुरीद ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी ! कभी कभी ऐसा होता है कि दिल की रग़बत के बिग़ैर भी मेरी ज़बान से **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जारी रहता है । उन्हों ने फ़रमाया : "येह भी तो मक़ामे शुक्र है कि तुम्हारे एक उ़ज़्व (या'नी

ज़बान) को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िक्र की तौफ़ीक़ बख़्शी है।'' जिस का दिल **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में नहीं लगता उस को बा'ज़ अवक़ात शैतान वस्वसा डालता है कि जब तेरा दिल **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में नहीं लगता तो ख़ामोश हो जा कि ऐसा ज़िक्र करना बे अ-दबी है। इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं : इस वस्वसे का जवाब देने वाले तीन क़िस्म के लोग हैं। **एक** किस्म उन लोगों की है जो ऐसे मौक़अ पर शैतान से कहते हैं : ''ख़ूब तवज्जोह दिलाई अब मैं तुझे ज़िच (या'नी बेज़ार) करने के लिये दिल को भी हाज़िर करता हूं।'' इस तरह शैतान के ज़ख़्मों पर नमक पाशी हो जाती है। **दूसरे** वोह अहमक़ हैं जो शैतान से कहते हैं : ''तूने ठीक कहा जब दिल ही हाज़िर नहीं तो ज़बान हिलाए जाने से क्या फ़ाएदा!'' और वोह **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ख़ामोश हो जाते हैं। येह नादान समझते हैं कि हम ने अक़्ल मन्दी का काम किया हालां कि उन्हों ने शैतान को अपना हमदर्द समझ कर धोका खा लिया है। **तीसरे** वोह लोग हैं जो कहते हैं : अगर्चे हम दिल को हाज़िर नहीं कर सके मगर फिर भी ज़बान को **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़ रखना ख़ामोश रहने से बेहतर है, अगर्चे दिल लगा कर **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करना इस तरह के **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कहीं बेहतर है। **(کیمیائے سعادت ج۲ ص۷۷۱)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तौबा की फ़ज़ीलत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दिल न लगे तब भी अमल जारी रखना ही हमारे लिये बेहतर है। बहर हाल **नेक बनने का नुस्ख़ा** हाज़िर किया है, इस के मुताबिक़ अमल करते जाइये। कभी न कभी तो اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ मन्ज़िल पा ही लेंगे। **म-दनी इन्आम नम्बर 16** में रोज़ाना दो रक्अत **नमाज़े तौबा** अदा कर के अपने गुनाहों से तौबा करने

की तरग़ीब दी गई है। तौबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को राज़ी करने और नेक बनने का बेहतरीन म-दनी नुस्ख़ा है। مَعَاذَاللّٰه अगर कभी गुनाह सरज़द हो जाए तो उसी वक़्त तौबा कर लेना वाजिब है तौबा में ताख़ीर ख़ुद एक नया गुनाह है। तौबा की एक फ़ज़ीलत सुनिये और झूमिये ! रसूले अकरम, **नूरे मुजस्सम**, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَاذَنْبَ لَهٗ ـ या'नी गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है गोया उस ने गुनाह किया ही नहीं है। (ابنِ ماجه ج٤ص ٤٩١ حديث٤٢٥٠)

नेक बनने के लिये दा'वते इस्लामी के **म-दनी माहोल** से हर दम वाबस्ता रहिये, **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में अव्वल ता आख़िर शिर्कत फ़रमाइये, हर इस्लामी भाई को चाहिये कि ज़िन्दगी में यक मुश्त 12 माह और हर 12 माह में 30 दिन नीज़ हर 30 दिन में कम अज़ कम 3 दिन सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के **म-दनी क़ाफ़िले** में ज़रूर सफ़र करे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे **नुबुव्वत,** मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (اِبنِ عَساكِر ج٩ص٣٤٣)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"ता'ज़ियत सुन्नते मुबा-रका है" के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से ता'ज़ियत के 16 म-दनी फूल

❁ **3 फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ﴿1﴾ जो किसी मुसीबत ज़दा से **ता'ज़ियत** करेगा उस के लिये उस मुसीबत ज़दा जैसा सवाब है (ترمذی ج۲ص ۳۳۸ حدیث ۱۰۷۵) ﴿2﴾ जो बन्दए मोमिन अपने किसी मुसीबत ज़दा भाई की **ता'ज़ियत** करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे करामत का जोड़ा पहनाएगा (ابن ماجه ج۲ ص ۲۶۸ حدیث ۱۶۰۱) ﴿3﴾ जो किसी **ग़मज़दा** शख़्स से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी **मुसीबत ज़दा** से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत (सारी) दुन्या भी नहीं हो सकती (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط ج۶ ص ۴۲۹ حدیث ۹۲۹۲) ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! वोह कौन है जो तेरे अ़र्श के साए में होगा जिस दिन उस के इ़लावा कोई साया न होगा ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "ऐ मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) ! वोह लोग जो मरीज़ों की इ़यादत करते हैं, जनाज़े के साथ जाते हैं और किसी फ़ौत शुदा बच्चे की मां से **ता'ज़ियत** करते हैं" (تمہید الفرش للسیوطی ص۶۲) ❁ **ता'ज़ियत** का मा'ना है : मुसीबत ज़दा आदमी को सब्र की तल्क़ीन करना । "ता'ज़ियत मस्नून (या'नी सुन्नत) है" (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 852) ❁ दफ़्न से पहले भी **ता'ज़ियत** जाइज़ है, मगर अफ़्ज़ल येह है कि दफ़्न के बा'द हो येह उस वक़्त है कि औलियाए मय्यित (मय्यित के अहले ख़ाना) जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ (या'नी रोना पीटना) न करते हों, वरना उन की तसल्ली के लिये दफ़्न से पहले ही करे (جوہرہ ص۱۴۱) ❁ **ता'ज़ियत** का वक़्त मौत से तीन[3] दिन तक है, इस के बा'द मक्रूह है कि ग़म ताज़ा होगा मगर जब **ता'ज़ियत** करने वाला या

जिस की **ता'ज़ियत** की जाए वहां मौजूद न हो या मौजूद है मगर उसे इल्म नहीं तो बा'द में ह़रज नहीं (ایضاً ، رَدُّالْمُحتار ج ۳ص۱۷۷) ❁ (ता'ज़ियत करने वाला) आ़जिज़ी व इन्किसारी और रन्जो ग़म का इज़्हार करे, गुफ़्त-गू कम करे और मुस्कुराने से बचे कि (ऐसे मौक़अ़ पर) मुस्कुराना (दिलों में) बुग़्ज़ो कीना पैदा करता है (आदाबे दीन, स. 35) ❁ मुस्तह़ब येह है कि मय्यित के तमाम अक़ारिब को **ता'ज़ियत** करें, छोटे बड़े मर्द व औ़रत सब को मगर औ़रत को उस के मह़ारिम ही **ता'ज़ियत** करें । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 852) **ता'ज़ियत** में येह कहे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को सब्रे जमील अ़त़ा फ़रमाए और इस मुसीबत पर अज्रे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मर्ह़ूम की मग़्फ़िरत फ़रमाए । नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन लफ़्ज़ों से **ता'ज़ियत** फ़रमाई : اِنَّ لِلّٰهِ مَااَخَذَ وَلَهٗ مَااَعْطٰى وَكُلٌّ عِنْدَهٗ بِاَجَلٍ مُّسَمًّى فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ (तरजमा :) ख़ुदा ही का है जो उस ने लिया और जो दिया और उस के नज़्दीक हर चीज़ एक मुक़र्ररा वक़्त तक है, लिहाज़ा सब्र करो और सवाब की उम्मीद रखो (بُخاری ج۱ص۴۳۴حدیث۱۲۸۴) ❁ मय्यित के **अड़ज़्ज़ा** (या'नी अ़ज़ीज़ों) का घर में बैठना कि लोग उन की **ता'ज़ियत** के लिये आएं इस में ह़रज नहीं और मकान के दरवाज़े पर या शारेए़ आ़म (या'नी आ़म रास्ते) पर बिछोने (या दरी वग़ैरा) बिछा कर बैठना बुरी बात है (عالمگیری ج۱ ص ۱۶۷ ، رَدُّالْمُحتار ج۳ ص۱۷۷) ❁ **क़ब्र** के क़रीब ता'ज़ियत करना मक्रूहे (तन्ज़ीही) है (دُرِّمُختار ج۳ ص۱۷۷) बा'ज़ क़ौमों में वफ़ात के बा'द आने वाली पहली शबे बराअत या पहली ईद के मौक़अ़ पर अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा अहले मय्यित के घर ता'ज़ियत के लिये इकठ्ठे होते हैं येह रस्म ग़लत़ है, हां जो किसी वजह से ता'ज़ियत न कर सका था वोह ईद के दिन ता'ज़ियत करे तो ह़रज नहीं इसी त़रह़ पहली बक़र ईद पर जिन अहले मय्यित पर क़ुरबानी वाजिब हो उन्हें क़ुरबानी करनी होगी वरना गुनहगार होंगे । येह भी याद रहे कि सोग के अय्याम गुज़र जाने के

बा वुजूद ईद आने पर मय्यित का सोग (ग़म) करना या सोग के सबब उ़म्दा लिबास वग़ैरा न पहनना ना जाइज़ व गुनाह है। अलबत्ता वैसे ही कोई उ़म्दा लिबास न पहने तो गुनाह नहीं ❁ जो एक बार **ता'ज़ियत** कर आया उसे दोबारा **ता'ज़ियत** के लिये जाना मक्रूह है (دُرِّمُختار ج۳ ص۱۷۷) ❁ अगर **ता'ज़ियत** के लिये औ़रतें जम्अ़ हों कि नौह़ा करें तो उन्हें खाना न दिया जाए कि गुनाह पर मदद देना है (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 853) ❁ **नौह़ा** या'नी मय्यित के औसाफ़ मुबा-लग़ा के साथ (या'नी बढ़ा चढ़ा कर ख़ूबियां) बयान कर के आवाज़ से रोना जिस को "बैन" कहते हैं बिल इज्माअ़ **ह़राम** है। यूंही वावेला **वा मुसीबता** (या'नी हाए मुसीबत) कह के चिल्लाना (ऐज़न, स. 854) ❁ अत़िब्बा (या'नी त़बीब) कहते हैं कि (जो अपने अ़ज़ीज़ की मौत पर सख़्त सदमे से दो चार हो उस के) मय्यित पर बिल्कुल न रोने से सख़्त बीमारी पैदा हो जाती है, आंसू बहने से दिल की गरमी निकल जाती है, इस लिये इस (बिग़ैर नौह़ा) रोने से हरगिज़ मन्अ़ न किया जाए (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 501) ❁ **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ता'ज़ियत के ऐसे प्यारे अल्फ़ाज़ होने चाहिएं जिस से उस ग़मज़दा की तसल्ली हो जाए, फ़क़ीर का तजरिबा है कि अगर इस मौक़अ़ पर ग़मज़दों को वाक़िआ़ते करबला याद दिलाए जाएं तो बहुत तसल्ली होती है। तमाम ता'ज़ियतें ही बेहतर हैं मगर बच्चे की वफ़ात पर (मह़ारिम का उस की) मां को तसल्ली देना बहुत सवाब है।

(मुलख़्ख़स अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 507)

"इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त" बराए ईसाले सवाब

दा'वते इस्लामी के तमाम ज़िम्मेदारों की ख़िदमतों में म-दनी इल्तिजा है कि आप के यहां किसी इस्लामी भाई को मरज़ या मुसीबत (म-सलन बच्चा बीमार होना, नोकरी छूटना, चोरी या डकैती होना, स्कूटर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है । (مسلم)

या मोबाइल फ़ोन छिन जाना, ह़ादिसा पेश आना, कारोबार में नुक़्सान हो जाना, इ़मारत गिर जाना, आग लग जाना, किसी की वफ़ात हो जाना वग़ैरा कोई सा भी सदमा) पहुंचे, सवाब की निय्यत से उस दुख्यारे की दिलजूई कर के सवाबे अ़ज़ीम के ह़क़दार बनिये कि **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "बेशक **अल्लाह तआ़ला** की बारगाह में फ़राइज़ के बा'द सब से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल येह है कि मुसल्मान को **ख़ुश** करे ।" (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير ج١١ص٥٩حديث١١٠٧٩) इन्तिक़ाल हो जाने पर हो सके तो फ़ौरन मय्यित के घर वग़ैरा पर ह़ाज़िरी दीजिये, मुम्किना सूरत में ग़ुस्ले मय्यित, नमाज़े जनाज़ा बल्कि तदफ़ीन में भी ह़िस्सा लीजिये । मालदारों और दुन्यवी नामदारों की दिलजूई करने वालों की उ़मूमन अच्छी ख़ासी ता'दाद होती है, मगर बेचारे ग़रीबों का पुरसाने ह़ाल कौन ? बेशक अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ आप अहले सरवत की ता'ज़ियत फ़रमाइये मगर ग़रीबों को भी नज़र अन्दाज़ मत कीजिये, इन "शख़्सिय्यात" के साथ साथ बिल ख़ुसूस आप के जिस मा तह़त ग़रीब इस्लामी भाई के यहां मय्यित हो जाए, उसे रिश्तेदारों वग़ैरा को जम्अ़ करने की तरग़ीब दिला कर उस के मकान पर ज़ियादा से ज़ियादा 92 मिनट का "**इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त**" रखिये, अगर सब तक आवाज़ पहुंचती हो तो फिर बिला ह़ाजत "साउन्ड सिस्टम" लगाने के मुआ़-मले में ख़ुदा से डरिये, ह़स्बे ह़ैसिय्यत **लंगरे रसाइल** का ज़रूर ज़ेह्न दीजिये, मगर त़आ़म का एहतिमाम हरगिज़ न होने दीजिये, (**मस्अला :** तीजे का खाना चूंकि उ़मूमन दा'वत की सूरत में होता है इस लिये अग़्निया के लिये जाइज़ नहीं सिर्फ़ ग़ु-रबा व मसाकीन खाएं, तीन[3] दिन के बा'द भी मय्यित के खाने से अग़्निया (या'नी जो फ़क़ीर न हों उन) को बचना चाहिये ।) जो वक़्त त़ै हो जाए उस की पाबन्दी कीजिये, "बा'द नमाज़े इ़शा होगा" कहने के बजाए घड़ी के मुत़ाबिक़ वक़्त त़ै कीजिये म-सलन रात 9 बजे का त़ै हुवा है तो लोगों का इन्तिज़ार

किये बिग़ैर ठीक वक़्त पर तिलावत से आग़ाज़ कर दीजिये, फिर ना'त शरीफ़ (दौरानिया 25 मिनट), सुन्नतों भरा बयान (दौरानिया 40 मिनट) और आख़िर में **ज़िक्रुल्लाह** (दौरानिया 5 मिनट), रिक़्क़त अंगेज़ दुआ (दौरानिया 12 मिनट) और सलातो सलाम (तीन अश्आ़र) मअ़ इख़्तितामी दुआ (दौरानिया 3 मिनट)। अ़लाक़े के तमाम ज़िम्मेदारान, मुबल्लिग़ीन, मुम्किना सूरत में मर्कज़ी मजलिसे शूरा के अराकीन और दीगर इस्लामी भाइयों की शिर्कत यक़ीनी बनाइये और कोशिश कर के ईसाले सवाब के लिये वहां से हाथों हाथ **म-दनी क़ाफ़िले** सफ़र करवाइये।

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

6 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1434 सि.हि.
20-12-2012

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	नंबर	उ़न्वान	नंबर
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	जमाअ़त की फ़ज़ीलत	11
क़दआवर सांप	2	तक्बीरे ऊला की फ़ज़ीलत	11
फ़ौत शुदा बच्चा मां बाप को जन्नत में ले जाएगा	4	नमाज़ में ह़ज का सवाब	12
आपस में हंसने पर आयत का नुज़ूल	5	दिन में पांच मर्तबा ग़ुस्ल की मिसाल	12
बांसरी से आयत की आवाज़ गूंज उठी !	5	जन्नती ज़ियाफ़त	12
नाबीना को आंखें मिल गईं	6	पहली सफ़	13
डाकू को हिदायत कैसे मिली ?	6	कौन सा अ़मल ज़ियादा अफ़्ज़ल ?	13
बेटे की मौत पर मुस्कुराहट	7	म-दनी काम बढ़ाने का नुस्ख़ा	15
क्या आप नेक बनना चाहते हैं ?	7	अ़मल करने वालों की तीन अक़्साम	15
यौमे क़ुफ़्ले मदीना	9	तौबा की फ़ज़ीलत	16
आ़मिलीने म-दनी इन्आ़मात के लिये बिशारते उ़ज़्मा	10	ता'ज़ियत के 16 म-दनी फूल	17
दूसरा म-दनी इन्आ़म	10	''इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त'' बराए ईसाले सवाब	20
तमाम सग़ीरा गुनाह मुआ़फ़	11	मआख़िज़ो मराजेअ़	23

ماخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قران مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	ابن عساکر	دارالفکر بیروت
روح البیان	داراحیاء التراث العربی بیروت	تمہید الفرش	المکتب الاسلامی بیروت
تفسیر خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	مقاصد حسنہ	دارالکتاب العربی بیروت
بخاری	دارالکتب العلمیہ بیروت	القول البدیع	مؤسسۃ الریان بیروت
مسلم	دار ابن حزم بیروت	روض الریاحین	دارالکتب العلمیہ بیروت
ابوداؤد	داراحیاء التراث العربی بیروت	تذکرۃ الاولیاء	انتشاراتِ گنجینہ تہران
ترمذی	دارالفکر بیروت	کیمیائے سعادت	انتشاراتِ گنجینہ تہران
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
مسند امام احمد	دارالفکر بیروت	عالمگیری	دارالفکر بیروت
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	جوہرہ	باب المدینہ کراچی
معجم اوسط	دارالکتب العلمیہ بیروت	مراٰۃ المناجیح	ضیاء القران پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
شعب الایمان	دارالکتب العلمیہ بیروت	آداب دین	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

यौमे कुफ़्ले मदीना

फ़ुज़ूल बात करने में गुनाह नहीं मगर फ़ुज़ूल बोलते बोलते गुनाहों भरी बातों में जा पड़ने का सख़्त अन्देशा रहता है इस लिये फ़ुज़ूल गोई से बचने की आ़दत बनाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल में हर महीने की पहली पीर शरीफ़ (या'नी इतवार मग़रिब ता पीर मग़रिब) "यौमे कुफ़्ले मदीना" मनाने की इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये तरग़ीब है, इस का लुत्फ़ तो वोह समझ सकता है जो येह दिन मनाता है। इस में **मक-त-बतुल मदीना** का रिसाला "ख़ामोश शहज़ादा" (48 सफ़्हात) एक बार पढ़ना या सुनना है, अकेले पढ़िये या आपस में थोड़ा थोड़ा पढ़ कर सुना दीजिये, इस त़रह ख़ामोशी का जज़्बा मिलेगा। **यौमे कुफ़्ले मदीना** में ह़त्तल इम्कान ज़रूरत की बात भी इशारे से या लिख कर कीजिये। हां जो इशारे वग़ैरा न समझता हो या जहां बोलना ज़रूरी हो वहां ज़बान से बोलिये म-सलन सलाम व जवाबे सलाम, छींक पर ह़म्द या ह़म्द करने वाले का जवाब, इसी त़रह नेकी की दा'वत देना वग़ैरा वग़ैरा। जो लोग इशारे नहीं समझते उन के साथ ज़रूरतन ज़बान से बातचीत कीजिये और येह म-दनी फूल तो उ़म्र भर के लिये क़बूल फ़रमा लीजिये कि जब भी काम की बात करनी हो कम से कम अल्फ़ाज़ में निमटा ली जाए, इतना ज़ियादा मत बोलिये कि मुख़ात़ब या'नी जिस से बात कर रहे हैं वोह बेज़ार हो जाए। बहर हाल हर उस अन्दाज़ से बचिये जो तन्फ़ीरे अ़वाम (या'नी लोगों में नफ़रत फैलने) का बाइस हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ ऐसे भी हैं जो हर माह लगातार तीन[3] दिन "यौमे कुफ़्ले मदीना" मनाते हैं। काश! हम ज़िन्दगी भर रोज़ाना ही "यौमे कुफ़्ले मदीना" मनाने वाले बन जाएं। काश! दिल के म-दनी गुलदस्ते में उ़म्र भर के लिये येह म-दनी फूल सज जाए : "फ़ुज़ूल गोई से बचो ताकि गुनाहों भरी बातों में पड़ कर जहन्नम में न जा पड़ो!"

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
مکتبۃ المدینہ
फ़ैज़ाने मदीना, श्री कोणिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net